एक साझी लड़ाई

वीणा शिवपुरी

राजस्थान के भटेरी गांव में 22 सितंबर '92 को महिला विकास कार्यक्रम की साथिन भंवरी बाई के साथ उसी गांव के रामकरण गूजर के साथी बद्री और ग्यारसा गूजर ने बलात्कार किया। भंवरी का दोष यह था कि वह बाल-विवाह के खिलाफ़ चलाए गए सरकारी अभियान में जुटी हुई थी। उसने रामकरण गूजर को समझाया था कि अपनी एक साल की लड़की की शादी न करे। पूरा सरकारी तंत्र इस अभियान में शामिल था लेकिन बदला लिया सिर्फ भंवरी से।

क्योंकि—वह निम्न वर्ग की है।
—वह ग़रीब है।
—वह औरत है।

आज के श्रेणीबद्ध, पितृसत्तात्मक समाज में ये सभी चीजें कमज़ोर बनाती हैं, व्यक्ति के खिलाफ जाती हैं। यहां तक कि सरकार भी कमजोर का साथ नहीं देती। गांव के स्तर पर पुलिस ने इस अपराध की रपट लिखने में ढिलाई बरती। चूंकि भंवरी एक कार्यकर्ता है उसकी समझ और चेतना का स्तर ऊंचा था।

उसने तुरंत डाक्टरी जांच की मांग की। उन कपड़ों को भी सहेज कर रखा। लेकिन इसके बावजूद उसकी डाक्टरी जांच में देरी की गई। पुलिस, डाक्टर और हाकिम सभी की मिलीभगत से इस बलात्कार के सबूतों को नष्ट कर दिया गया। गांव में भंवरी के खिलाफ प्रचार किया गया कि बलात्कार कभी हुआ ही नहीं। भंवरी ने झूठी कहानी गढ़ी है। यह तो जले पर नमक छिड़कने वाली बात हुई।

आज सारा गांव धनी गूजरों की तरफ़ है। भंवरी और उसके पति मोहन से कोई लेन-देन नहीं रखता। उनसे कोई बात नहीं करता। सिर्फ़ इसलिए कि भंवरी ने अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई है। वह और औरतों की तरह खून का घूंट पीकर चुप नहीं रही। उसने अपनी ही बेइज्जती की कहानी खुलेआम दोहराने का साहस किया है ताकि कभी तो इसका अंत हो। कभी तो तेल डाल के बैठी सरकार के कानों पर जूं रेंगे। कभी तो यह पितृसत्तात्मक व दबावपूर्ण समाज औरत के दर्द को पहचाने।

भंवरी अकेली नहीं है

सारे गांव ने चाहे भंवरी के साथ दगा की हो लेकिन सारे देश की औरतें भंवरी के साथ हैं। भंवरी के साथ हुए इस अन्याय की खबर फैलते ही चारों तरफ़ से उसके समर्थन में आवाज़ उठने लगीं।

सबसे पहले तो महिला विकास कार्यक्रम की साथिनों और बाकी कार्यकर्ताओं ने इस मुद्दे को उठाया। दिल्ली के महिला समूहों से संपर्क किया और फिर देश के अन्य सरकारी कार्यक्रमों की कार्यकर्ताओं को अपने से जोड़ा।

यह सवाल सिर्फ़ भंवरी का नहीं बल्कि उन लाखों औरतों का है जो समाज में बदलाव लाने के सरकारी और ग़ैर-सरकारी कार्यक्रमों से जुड़ी हुई हैं। अपने-अपने तरीके से बंधे बंधाए ढर्रे को चुनौती दे रही हैं।

एक ताक़तवर अभियान

एक महीने बाद तक वे अभियुक्त खुलेआम घूम रहे हैं। सरकार ने अब तक कोई कदम नहीं उठाया था। इसलिए 22 अक्तूबर के दिन सारे देश से औरतें जयपुर में एक विशाल प्रदर्शन करने के लिए इकट्ठा हुईं।

सुबह ठीक दस बजे बसें भर-भर कर औरतें राम निवास बाग पहुंचने लगीं। ये औरतें गुजरात से लेकर गढ़वाल तक से आई थीं। सबके हाथों में नारे लिखे पोस्टर और बैनर थे। सबके होठों पर जोश भरे शब्द थे सरकार के खिलाफ, अन्याय और बलात्कार के खिलाफ़।

— "भंवरी भटेरी को न्याय दो न्याय दो।"
— "अंधा कानून चौपट न्याय
बलात्कारी को सरकार बचाए।"
— "हम भारत की नारी हैं
फूल नहीं चिंगारी हैं।"

चारों तरफ़ एक समुद्र नज़र आता था। औरतों का समुद्र, जोश और उत्साह से थपेड़े लेता समुद्र। लगभग बारह सौ मज़बूत औरतें एक जुलूस की शक्ल में जयपुर के मुख्य रास्तों से

गुज़रीं। इसमें बूढ़ी, जवान और बच्चियां, पढ़ी-लिखी शहरी, पेशेवर और देहातन औरतें थीं। कई अपने नन्हे-नन्हे बच्चों को छाती से चिपकाए दोपहर की कड़ी धूप में चल रही थीं।

करीब आठ-नौ किलोमीटर पैदल चल कर यह जुलूस 'स्टेच्यू सर्कल' पहुंचा जहां एक आम सभा हुई। कुछ और औरतों ने भी अपने साथ हुई ऐसी घटनाओं को दोहराया। बलात्कारियों का साथ देने वाली ताकतों को धिक्कारा। भंवरी बाई ने सामने खड़ी पुलिस की तरफ़ उंगली उठा कर पूछा— "आज निहत्थी औरतों के सामने तुम बंदूकें लेकर खड़े हो। जब मेरे साथ अन्याय हुआ था तब कहां थे तुम सब और तुम्हारी ये बंदूकें?"

एक अहम सवाल

भंवरी ने एक बड़ा अहम सवाल उठाया। पुलिस, न्यायालय, सरकार और इसका सारा तंत्र किसलिए है? क्या सिर्फ़ बेगुनाह और कमज़ोर नागरिकों को सताने के लिए या उनकी रक्षा के

लिए। एक आम आदमी को छोटा-मोटा सिपाही भी गिरफ्तार करने की ताक़त रखता है। हर रोज़ हज़ारों लोग गिरफ्तार किए जाते हैं। लाखों बिना मुक़दमे के जेलों में सड़ रहे हैं और आज बलात्कारी को गिरफ्तार करने की पुलिस में हिम्मत नहीं। सरकार के हाथ बंधे हुए हैं। नेताओं की सिट्टी-पिट्टी गुम है।

— तो क्यों बैठे हैं ये ऊंची कुर्सियों पर?
— क्यों दुहाई देते हैं जन-सेवा की?
— क्यों बात करते हैं न्याय की?

औरतों के शांतिपूर्ण जुलूस पर लाठी चलाने और कई पुरुष कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार करके गायब कर देने में तो इन्हें पल भर की देर न लगी। चुनाव के समय धूप-धूल की परवाह न करते हुए, गांव-गांव जाकर, हाथ जोड़ कर वोट मांगने वाले नेता उस दिन औरतों की बात सुनने के लिए अपने दफ्तर से चार कदम चल कर बाहर फाटक तक न आ सके। जबकि ये औरतें सैंकड़ों, हज़ारों मील का सफ़र कर अपनी जेब से पैसा खर्च कर वहां पहुंची थीं। 22 अक्तूबर के प्रदर्शन ने सरकार की दोमुंही चाल से पर्दा उठा दिया।

एक तरफ़ औरतों के विकास, उनके उत्थान की बात करने वाली यह सरकार मौका पड़ने पर औरतों पर अन्याय करने से नहीं चूकती।

हम चेत चुके हैं

भंवरी की लड़ाई हम सबकी लड़ाई है। और एक लम्बी लड़ाई है। एक प्रदर्शन इस लड़ाई की शुरुआत भले ही हो, अंत नहीं है। जब तक इस देश का कानून भंवरी को न्याय नहीं देता, जब तक सरकार यौन अत्याचार के खतरे को स्वीकार करके नीतिगत परिवर्तन नहीं लाती, यह संघर्ष जारी रहेगा। □